AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume:1 Issue:3
March 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: Hindi

ममता कालिया के कथा साहित्य में युग बोध

अनीता कुमारी,
डॉ. राजेश कुमार शर्मा
हिंदी विभाग, कला संकाय, भगवंत
विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान

DECLARATION: I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER /ARTICLE, HERE BY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATION IN THE JOURNALIS COMPLETELY MY OWN GENUINE PAPER. IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT /PATENT/ OTHER REAL AUTHOR ARISES, THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL WEBSITE. FOR THE REASON OF CONTENT AMENDMENT /OR ANY TECHNICAL ISSUE WITH NO VISIBILITY ON WEBSITE /UPDATES, I HAVE RESUBMITTED THIS PAPER FOR THE PUBLICATION. FOR ANY PUBLICATION MATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLY HIDDEN BY ME OR OTHERWISE, I SHALL BE LEGALLY RESPONSIBLE. (COMPLETE DECLARATION OF THE AUTHOR AT THE LAST PAGE OF THIS PAPER /ARTICLE

सारांश

ममता कालिया कई शहरों में रहने, पढ़ने और पढ़ाने के बाद अब ममता कालिया दिल्ली (एनसीआर) में रहती हैं और पढ़ती–लिखती हैं। वह हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं के लेखक हैं। भारतीय समाज की विशेषताओं और विषमताओं पर पैनी नजर रखने वाली ममता कालिया की हर रचना के केंद्र में आज का समाज ही है। विकासशील समाज में बिगड़ते रिश्ते, प्रगति के आर्थिक और सामाजिक दबाव, महिलाओं की प्रगति को देखकर पुरुष मनोविज्ञान की निराशा और कामकाजी महिलाओं के संघर्ष उनके पसंदीदा विषय हैं। प्रकाशित पुस्तकों की संख्या अधिक होने के कारण यहाँ केवल उनकी प्रमुख प्रकाशित पुस्तकों का ही उल्लेख किया जा रहा है। ममता कालिया ने हिंदी साहित्य को कविता, कहानी, उपन्यास, संस्मरण, नाटक, यात्रा साहित्य और निबंधों से समृद्ध किया है।

मुख्यशब्द: कविता, कहानी, उपन्यास, संस्मरण, नाटक, यात्रा साहित्य और निबंध

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume:1 Issue:3
March 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: Hindi

प्रस्तावना

ममताजी के कहानी एवं उपन्यास साहित्य में युगों–युगों से पीडित, शोषित, प्रताडित, उपेक्षित, रूढियों के बंधन में बँधी रहनेवाली नायिका यथार्थ व सजीव अनुभूतिपरक चित्र विद्यमान है। ममता कालिया के कहानी एवं उपन्यास साहित्य में कामकाजी महिला प्रमुखता से दिखाई देती है। ममता कालिया ने अनेक कहानी संकलनों का सम्पादन किया है तथा 5 वर्ष महात्मा गाँधी हिन्दी अन्तरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय, वर्धा की इंग्लिश पत्रिका भ्पदकप की सम्पादक रही हैं। उन्हें मिले पुरस्कारों और सम्मानों की सूची में कुछ इस प्रकार हैं: सर्वश्रेष्ठ कहानी सम्मान हिन्दुस्तान टाइम्स, दिल्लीय यशपाल कथा सम्मान, साहित्य भूषण सम्मान, राम मनोहर लोहिया सम्मान (उ. प्र. हिन्दी संस्थान द्वारा)य वनमाली सम्मान, वाग्देवि सम्मान, सीता स्मृति सम्मान, कमलेश्वर स्मृति सम्मान, के. के. बिड़ला न्यास का व्यास सम्मान।

ममता कालिया के कथा साहित्य में श्युग बोधश एक महत्वपूर्ण पहलू है जो मानवीय अनुभवों, समाजिक मुद्दों, और सामाजिक परिवर्तन को गहराई से समझने और प्रकट करने का प्रयास करता है। युग बोध उस विशेष संवेदनशीलता और समाजशास्त्रीय समझ को दर्शाता है जो लेखिका के द्वारा चित्रित किए गए समाज के प्रति उनके आलोचनात्मक दृष्टिकोण को उजागर करता है।

ममता कालिया की कहानियों में 'युग बोध' उस संवेदनशीलता को प्रकट करता है जो आधुनिक समाज के चुनौतियों, विरोधाभासों और समस्याओं को समझने की क्षमता में समाहित है। उनकी कहानियाँ सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, और व्यक्तिगत मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करती हैं और पाठकों को विचार के प्रेरणात्मक प्रस्तुतियों के माध्यम से सामाजिक बदलाव की दिशा में सोचने के लिए प्रेरित करती हैं।

युग बोध के माध्यम से, ममता कालिया अपनी कहानियों में समाज के विभिन्न पहलुओं को दर्शाती हैं, जैसे कि स्त्री सशक्तिकरण, सामाजिक न्याय, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, और मानवता के मूल्य। उनके लेखन में युग बोध उस समाजशास्त्रीय संवेदनशीलता को दर्शाता है जो पाठकों को अपने

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:1 Issue:3
March 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: Hindi

समाजिक और व्यक्तिगत जीवन में समस्याओं और समाधानों को समझने के लिए प्रेरित करता है।

समाप्ति से, ममता कालिया के कथा साहित्य में श्युग बोधश एक महत्वपूर्ण और प्रेरणात्मक पहलू है जो सामाजिक और मानवीय मुद्दों को समझने और समाधान करने के लिए पाठकों को प्रेरित करता है। उनके कथानक साहित्य में श्युग बोधश व्यक्तिगत संघर्ष, सामाजिक न्याय, और मानवीय सम्बन्धों के महत्व को प्रमुखता देता है, जिससे पाठकों को समाज के मुद्दों को समझने और उन पर कार्रवाई करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

प्रमुख कृतियाँ

दो खंडों में अब तक की संपूर्ण कहानियाँ ममता कालिया की कहानियाँ नाम से प्रकाशित। उनके शुरुआती पाँच कहानी–संग्रहों की कहानियाँ एक साथ प्रथम खंड[5] में तथा दूसरे खण्ड में उनके चार कहानी संग्रहों को शामिल किया गया है।[6]

कहानी संग्रहरू छुटकारा, एक अदद औरत, सीट नं. छरू, उसका यौवन, जाँच अभी जारी है, प्रतिदिन, मुखौटा, निर्मोही, थिएटर रोड के कौए, पच्चीस साल की लड़की।[7]

उपन्यास : बेघर(1971), नरक दर नरक(1975), प्रेम कहानी(1980), लड़कियाँ(1987), एक पत्नी के नोट्स(1997), दौड़(2000), अँधेरे का ताला(2009), दुक्खम् – सुक्खम्(2009)कल्चर वल्चर(2016),सपनों की होम डिलीवरी(2017)

कविता संग्रह : खाँटी घरेलू औरत, कितने प्रश्न करूँ, नरक दर नरक, प्रेम कहानी

नाटक संग्रह : यहाँ रहना मना है, आप न बदलेंगे

संस्मरण: कितने शहरों में कितनी बार[8]

अनुवाद : मानवता के बंधन (उपन्यास – सॉमरसेट मॉम)

संपादन : बीसवीं सदी का हिंदी महिला–लेखन,खंड ३

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:1 Issue:3
March 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: Hindi

सम्मान और पुरस्कार

वर्ष 2017 में प्रतिष्ठित 'व्यास सम्मान' (उपन्यास दुक्खम–सुक्खम के लिए [9][10]

अभिनव भारती सम्मान

साहित्य भूषण सम्मान(2004)

यशपाल स्मृति सम्मान

महादेवी स्मृति पुरस्कार

कमलेश्वर स्मृति सम्मान

सावित्री बाई फुले स्मृति सम्मान

अमृत सम्मान

लमही सम्मान (2009)[11]

जनवाणी सम्मान (2008)[12]

सीता पुरस्कार (2012)

ममता कालिया के कथा साहित्य में युग बोध

ममता कालिया एक उत्कृष्ट हिंदी कहानीकार हैं, जो अपनी कहानियों में गहराई से मानवीय अनुभवों को छूने की कला को समर्पित करती हैं। उनकी कहानियों में युग बोध का महत्वपूर्ण स्थान है, जो मानवीय जीवन के विभिन्न पहलुओं को व्यक्त करता है।

ममता कालिया की कथाओं में युग बोध विभिन्न रूपों में प्रकट होता है। वे समाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, और मानवता के मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करती हैं और इन मुद्दों को अपनी कहानियों के माध्यम से सामाजिक जागरूकता और विचारशीलता की दिशा में प्रेरित करती हैं।

उनकी कहानियों में युग बोध का एक प्रमुख पहलू व्यक्तिगत संघर्ष और संघर्षों का समाधान है। वे अपने पात्रों को जीवन के मुश्किल संघर्षों का सामना करने के लिए प्रेरित करती हैं और उन्हें सामाजिक बदलाव के लिए अपनी भूमिका निभाने के लिए प्रोत्साहित करती हैं।

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:1 Issue:3
March 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: Hindi

ममता कालिया की कहानियों में युग बोध का एक और महत्वपूर्ण पहलू उनकी भाषा और रचनात्मक शैली में है। उनकी कहानियों की भाषा उत्कृष्ट, संवेदनशील और सरल होती है, जो पाठकों को उनके कहानी के विषय में सहजता से संवेदनशीलता का अनुभव कराती है। उनकी रचनात्मक शैली भी उनकी कहानियों को अद्वितीय बनाती है, जो पाठकों को उनके संवाद, पात्रों की विचारधारा और कहानी की संरचना में लुब्ध करती है।

सारांश के रूप में, ममता कालिया के कथानक साहित्य में युग बोध का महत्व अत्यंत उच्च है। उनकी कहानियाँ सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर विचार करती हैं और पाठकों को मानवता और समाज के महत्वपूर्ण मुद्दों के प्रति संवेदनशीलता बढ़ाती हैं। उनके कथानक साहित्य में युग बोध एक अभिनव सोच का प्रतीक है, जो मानवता के निरंतर विकास और समाजिक परिवर्तन की दिशा में अद्वितीय योगदान देता है।

उपसंहार

ममता कालिया के कथा साहित्य में युग बोध एक महत्वपूर्ण पहलू है, जो मानवीय अनुभवों और समाज की समस्याओं को गहराई से समझने और प्रकट करने का प्रयास करता है। उनकी कहानियों में युग बोध का महत्वपूर्ण संदेश होता है, जो सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, और मानवता के मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करता है।

ममता कालिया की कहानियों में युग बोध का एक प्रमुख पहलू व्यक्तिगत संघर्ष और संघर्षों का समाधान है। उनके पात्र अक्सर जीवन के मुश्किल संघर्षों का सामना करते हैं और उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं। इन पात्रों के माध्यम से, कालिया वास्तविकता को प्रकट करती है और पाठकों को जीवन के मुश्किलाहटों के सामना करने के लिए प्रेरित करती है।

उनकी कहानियों में युग बोध का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू उनकी भाषा और रचनात्मक शैली में होता है। उनकी कहानियों की भाषा उत्कृष्ट, संवेदनशील और सरल होती है, जो पाठकों को उनके कहानी के विषय में सहजता से संवेदनशीलता का अनुभव कराती है। उनकी रचनात्मक शैली भी उनकी कहानियों को अद्वितीय बनाती है, जो पाठकों को उनके संवाद, पात्रों की विचारधारा और कहानी की संरचना में लुब्ध करती है।

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:1 Issue:3
March 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: Hindi

समाप्तिरूप में, ममता कालिया के कथा साहित्य में युग बोध का महत्व अत्यंत उच्च है। उनकी कहानियाँ सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर विचार करती हैं और पाठकों को मानवता और समाज के महत्वपूर्ण मुद्दों के प्रति संवेदनशीलता बढ़ाती हैं। उनके कथा साहित्य में युग बोध एक अभिनव सोच का प्रतीक है, जो मानवता के निरंतर विकास और समाजिक परिवर्तन की दिशा में अद्वितीय योगदान देता है।

सन्दर्भ

1. कालिया, ममता. "ममता कालिया की कहानी–परदेसी". अभिव्यक्ति (वेब पत्रिका). मूल (अभिव्यक्ति) से 19 मार्च 2015 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 15 मार्च 15 मार्च 2014. author&link1= के मान की जाँच करें (मदद); access&date में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
2. कालिया, ममता. "पुस्तक की भूमिका". वाणी प्रकाशन. मूल से 15 मार्च 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 15 मार्च 15 मार्च 2014. access&date में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
3. कालिया, ममता. "लेखक ममता कालिया का व्यक्तित्व". महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय. मूल (हिन्दी समय) से 5 मई 2015 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 15 मार्च 15 मार्च 2014. access&date में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
4. कालिया, ममता. "ममता कालिया का व्यक्तित्व". अभिव्यक्ति (वेब पत्रिका). मूल (अभिव्यक्ति) से 19 मार्च 2015 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 15 मार्च 15 मार्च 2014. author&link1 के मान की जाँच करें |access&date= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
5. शीर्षक:ममता कालिया की कहानियाँ – भाग 1, प्रकाशक=:वाणी प्रकाशन, आईएसबीएन : 81–8143–300–9, प्रकाशित रूफरवरी 02, 2005:, मुखपृष्ठ रूसजिल्द:, भाषा:हिन्दी
6. शीर्षक:ममता कालिया की कहानियाँ भाग–2, प्रकाशक:वाणी प्रकाशन, आईएसबीएन : 81–8143–485–4, प्रकाशित:फरवरी 02, 2006, मुखपृष्ठ :सजिल्द, भाषा:हिन्दी

ISSN: 2320-3714
Volume:1 Issue:3
March 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: Hindi

7. कालिया, ममता. "ममता कालिया की पुस्तकें". भारतीय साहित्य संग्रह. मूल से 15 मार्च 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 15 मार्च 15 मार्च 2014. access&date में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
8. शीर्षक:कितने शहरों में कितनी बार, प्रकाशक:वाणी प्रकाशन:, आईएसबीएन : 9788126718764, प्रकाशित : जीते जी इलाहबाद: राजकमल प्रकाशन, 2021
9. फरवरी जनवरी 01, 2010, मुखपृष्ठ : सजिल्द, भाषा:हिन्दी
10. "साहित्यकार ममता कालिया को व्यास सम्मान". मूल से 19 अक्तूबर 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 19 अक्तूबर 2018.
11. "Hindi writer Mamta Kalia to get the 27th Vyas Samman"- मूल से 9 दिसंबर 2017 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 8 दिसंबर 2017.
12. "कहानीकार ममता कालिया को लमही सम्मान". नवभारत टाइम्स. 28 जून 2010. मूल से 15 मार्च 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 15 मार्च 15 मार्च 2014. |access&date¾ में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
13. "समालोचना में समाचार"- मूल से 15 मार्च 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 15 मार्च 2014.
14. हिन्दी भाषा की लेखिका ममता कालिया को द्वितीय सीता पुरस्कार |तबीपअमक 2014–03–15 वे बैक मशीनजागरण जोश (हिन्दी)

Author's Declaration

I as an author of the above research paper/article, hereby, declare that the content of this paper is prepared by me and if any person having copyright issue or patent or anything otherwise related to the content, I shall always be legally responsible for any issue. For the reason of invisibility of my research paper on the website/amendments/updates, I have resubmitted my paper for publication on the same date. If any data or information given by me is not correct, I shall always be legally responsible. With my whole responsibility legally and

ISSN: 2320-3714
Volume:1 Issue:3
March 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: Hindi

formally have intimated the publisher (Publisher) that my paper has been checked by my guide (if any) or expert to make it sure that paper is technically right and there in noun accepted plagiarism and hentriacontane is genuinely mine. If any issue arises related to Plagiarism/ Guide Name/ Educational Qualification/ Designation/Address of my university /college /institution / Structure or Formatting/ Resubmission /Submission /Copyright /Patent/Submission for any higher degree or Job/Primary Data/Secondary Data Issues. I will be solely/entirely responsible for any legal issues. I have been informed that the most of the data from the website is invisible or shuffled or vanished from the data base due to some technical fault or hacking and therefore the process of resubmission is there for the scholars/students who finds trouble in getting their paper on the website. At the time of resubmission of my paper I take all the legal and formal responsibilities, If I hide or do not submit the copy of my original documents (Andhra/Driving License/Any Identity Proof and Photo)in spite of demand from the publisher then my paper maybe rejected or removed from the website anytime and may not be consider for verification. I accept the fact that as the content of this paper and the resubmission legal responsibilities and reasons are only mine then the Publisher (Airo International Journal/Airo National Research Journal) is never responsible. I also declare that if publisher finds Any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my paper may be removed from the website or the watermark of remark /actuality may be mentioned on my paper. Even if anything is found illegal publisher may also take legal action against me

अनीता कुमारी
डॉ. राजेश कुमार शर्मा

*****